मधुबन ओम् शान्ति अंक 307 फरवरी 2018

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र
(13-01-18)

प्राणेश्वर अव्यक्त बापदादा के अति लाडले, सदा अपनी अव्यक्त स्थिति द्वारा अव्यक्ति वायुमण्डल बनाने वाले, सदा ऊंची स्थिति में स्थित रह सर्व आत्माओं को सुख-शान्ति की सकाश देने वाले, विश्व कल्याण की सेवा पर उपस्थित निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - इस जनवरी मास में तो हर एक ने ब्रह्मा बाप की स्मृतियों के साथ बहुत अच्छी लगन के साथ योग तपस्या की है। बहुत से स्थानों पर अखण्ड योग के कार्यक्रम भी चले हैं। अभी फिर फरवरी मास में हम सबके अति प्रिय शिव भोलानाथ बाप की हीरे तुल्य त्रिमूर्ति शिवजयन्ती **"महाशिवरात्रि"** का विशेष यादगार पर्व अनेक आत्माओं को परमात्म अवतरण का सन्देश देने, ईश्वरीय सेवाओं की धूम मचाने का दिन है। यह दिन भारत में तो चारों ओर खूब धूमधाम से मनाते, हर स्थान पर शिवबाबा का ध्वज फहराते, अनेक विधियों से सेवायें करते हैं। सेवाओं के निमित्त विशेष बुलेटिन भी आपके पास आ रहा है। लेकिन समय प्रमाण अभी हम सबको अपनी स्थिति ऐसी बनानी है जो कोई भी घड़ी व्यर्थ संकल्प भी उत्पन्न न हो। अभी तक अगर कोई कमी रह गयी है तो उसे महसूस करके दृढ़ता की तपस्या से परिवर्तन करना है। निश्चयबुद्धि निश्चिंत स्थिति में रह फिर जो सेवा सामने आये उसे एक्यूरेट करना है क्योंकि अभी हम सबको मीठे बाबा से जो पढ़ाई और पालना मिल रही है, जो प्राप्तियां हुई हैं, प्यार मिला है वो सारे कल्प में नहीं मिलेगा। तो इसका अच्छी तरह से लाभ लेना है और पूरा रिटर्न देना है। मेरी भावना है कि हरेक बाबा का बच्चा बाबा के काम आये, ऐसा एक्यूरेट मिसाल बने जिसको दुनिया वाले देख कहें कि यह क्या था, अभी क्या बन गया है!

हम सब ज्ञान सूर्य, ज्ञान चन्द्रमा के बच्चे स्टार रूप में सदा चमकते रहें तब साक्षात्कार की धूम मचेगी और परमात्म प्रत्यक्षता होगी। अभी तक तो मुख से बहुत अच्छी सेवायें चली हैं, परन्तु अभी सबको अनुभव से साक्षात्कार कराना है, जो कभी भी किसी को भूलेगा नहीं। साक्षात्कार में परमात्मा से लाइट माइट ऐसी मिलती है जो हर कर्म राइट होने लगते हैं। लाइट, माइट, एवरीथिंग राइट। हम कोई भी कर्म ऐसा करें जो हमें देख औरों को भी करने की प्रेरणा मिले, शक्ति मिले। कहते हैं कर्म बड़े बलवान हैं, परमात्मा सर्वशक्तिवान है। फिर ज्ञान कितना शॉर्ट और स्वीट जीवन में लाने वाला है। सिर्फ सुनने, सोचने या सुनाने वाला नहीं है। लेकिन ज्ञान से प्रैक्टिकली अपने दिल को दयालु, कृपालु और रहमदिल बनाए दु:खियों पर रहम करना है। अपने जीवन की रक्षा करना, कुछ भी हो अपने को दु:खी होने नहीं देना, यह है सच्ची-सच्ची सेवा। हमारी अन्दर की नियत साफ है तो जो संकल्प करते हैं उसे प्रैक्टिकल में करना सहज हो जाता है। बाबा का जो प्रिय बच्चा ज्ञानी तू आत्मा है, वह सदा वाह वाह करेगा। कभी हाय हाय या व्हाई, व्हाई नहीं। तो अब से सदा वाह बाबा वाह ही निकलता रहे। इसमें मैं कौन, मेरा कौन और मुझे क्या करने का है! बाबा ने इतनी समझ दी है जो समझदार बच्चे हैं वे सदा नियम प्रमाण चलते हैं। सदा खुश रहते हैं, सबको खुशियां बांटते हैं। बोलो, ऐसा ही अनुभव है ना। अच्छा!

सभी को 82 वीं त्रिमूर्ति शिवजयन्ती के पावन पर्व की पदमगुणा बधाई हो, बधाई हो।

सबको बहुत-बहुत याद.....

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.जानकी

ये अव्यक्त इशारे

"सेवा में सफलता प्राप्त करने की विधियाँ"

1) वर्तमान समय की सेवा में सफलता का विशेष साधन है - वृत्ति से वायुमण्डल बनाना। आजकल की आत्माओं को अपनी मेहनत से आगे बढ़ना मुश्किल है इसलिए अपने वायब्रेशन द्वारा वायुमण्डल ऐसा पावरफुल बनाओ जो आत्मायें स्वत: आकर्षित होते आ जाएं।

2) बुद्धि जो भी निर्णय करे वह श्रीमत के अनुकूल हो, श्रीमत के सिवाए और कोई बात बुद्धि में न आये। बुद्धि में सदा बाबा की स्मृति हो तो आटोमेटिकली जजमेन्ट सत्य और सफलता वाली होगी। निर्मानता ही सेवा की सफलता का साधन है। निर्मान बन झुकना यह कोई छोटा बनना नहीं है लेकिन सफलता के फल सम्पन्न बनना है।

3) सेवा में रहते कहाँ न्यारा बनना होता है और कहाँ प्यारा - इसके ऊपर विशेष अटेन्शन दो। अगर प्यार से सेवा न करो तो भी ठीक नहीं और प्यार में फँसकर सेवा करो तो भी ठीक नहीं। तो प्यार से सेवा करो लेकिन न्यारी स्थिति में स्थित होकर करो तब सफलता होगी। अगर मेहनत के हिसाब से सफलता कम मिलती है तो जरूर प्यारे और न्यारे बनने के बैलेन्स में कमी है।

4) सेवाधारियों को सदा सफलता स्वरूप रहने के लिए बाप समान बनना है। एक ही शब्द याद रहे - फालो फादर। जो भी कर्म करते हो - चेक करो कि यह बाप का कार्य है। अगर बाप का है तो मेरा भी है, बाप का नहीं तो मेरा भी नहीं। यह चेकिंग की कसौटी सदा साथ रहे तो जैसे बाप सदा सफलता स्वरूप है वैसे स्वयं भी सदा सफलता स्वरूप हो जायेंगे।

5) सेवा की सफलता का आधार - त्याग और तपस्या है। एक बाप दूसरा न कोई - यह है हर समय की तपस्या और जैसा समय, जैसी समस्यायें, जैसे व्यक्ति वैसे स्वयं को मोल्ड कर स्व कल्याण और औरों का कल्याण करने के लिए सदा इजी रहना, कहाँ अपने नाम का त्याग करना पड़े, कहाँ संस्कारों का, कहाँ व्यर्थ संकल्पों का, कहाँ स्थूल अल्पकाल के साधनों का... तो उस परिस्थिति और समय अनुसार अपनी श्रेष्ठ स्थिति बना लेना अर्थात् अपने को मोल्ड कर लेना इसको कहा जाता है त्याग। यह त्याग और तपस्या ही सेवा की सफलता का आधार है।

6) कोई भी कार्य करते डबल लाइट फरिश्ता वा ट्रस्टी होकर रहो तो सफलता मिलती रहेगी। साफ दिल मुराद हांसिल। श्रेष्ठ संकल्पों की सफलता जरूर होती है, एक श्रेष्ठ संकल्प बच्चे का और हजार श्रेष्ठ संकल्प का फल बाप द्वारा प्राप्त हो जाता है। एक का हजार गुणा मिल जाता है।

7) सर्व ब्राह्मणों का एक संकल्प, यही कार्य की सफलता का आधार है। किसी भी कार्य में सबका सहयोग चाहिए। किले की एक ईट भी कमजोर होती है तो किले को हिला सकती है। इसलिए छोटे बड़े सब इस ब्राह्मण परिवार के किले की ईट हो तो सभी को एक ही संकल्प द्वारा कार्य को सफल करना है। सबके मन से यह आवाज निकले कि यह मेरी जिम्मेवारी है तब सफलता मिलेगी।

8) कितनी भी रूकावटें आएं लेकिन एक बल एक भरोसे के आधार पर सफलता मिलती रही है और मिलती रहेगी। जहाँ सर्व शक्तिवान बाप साथ है वहाँ यह छोटी-छोटी बातें ऐसे समाप्त हो जाती हैं जैसे कुछ भी थी ही नहीं। असम्भव भी सम्भव हो जाता है क्योंकि सर्व शक्तिवान के बच्चे बन गए। 'मक्खन से बाल' समान सब बातें सिद्ध हो जाती हैं।

9) मन्सा में शुभ भावना, वाणी में बाप से सम्बन्ध जुड़ाने वाले शुभ कामना के श्रेष्ठ बोल और सम्बन्ध सम्पर्क में आने से स्नेह और शान्ति के स्वरूप से आकर्षित करो। तो सर्व प्रकार की सेवा से सफलता को पायेंगे। अब ऐसा प्लैन बनाओ।

10) जहाँ युनिटी है वहाँ सहज सफलता है। लेकिन गिराने में युनिटी नहीं करना, सदा उड़ती कला में जाना है और सबको ले जाना है – यही लक्ष्य रहे। सदा आज्ञाकारी, वफादार बन हर कदम में फॉलो फादर करो। तो बाप के गुण वह बच्चों के, जो बाप का कर्तव्य वह बच्चों का, जो बाप के संस्कार वह बच्चों के.. यही सफलता मूर्त बनने का आधार है।

11) अपने को निमित्त समझकर चलो तो सदा हल्के और सफलतामूर्त रहेंगे। कभी सेवा कम होती, कभी ज्यादा तो बोझ न लगे। क्या होगा, कैसे होगा। कराने वाला करा रहा है और मैं सिर्फ निमित्त बन कार्य कर रही हूँ – यही स्मृति सफलता मूर्त बना देगी।

12) जैसे आजकल के जमाने में पैर के नीचे पहिये लगाकर दौड़ते हैं, वह कितने हल्के होते हैं। उनकी रफ्तार तेज हो जाती है। तो जब बाप चला रहा है, तो श्रीमत के पहिये लगने से स्वत: ही पुरूषार्थ की रफ्तार तेज हो जायेगी और सफलता मिलती रहेगी।

13) सफलता के लिए अपने पास एक रूहानी तावीज़ रखो - ''रिगार्ड देना ही रिगार्ड लेना है''। यह रिगार्ड का रिकार्ड सफलता

का अविनाशी रिकार्ड हो जायेगा। सदा मुख पर एक ही सफलता का मन्त्र हो - ''पहले आप''। यथार्थ रूप से पहले मैं को मिटाकर दूसरे को आगे बढ़ाना सो अपना बढ़ना समझ चलने से सफलता को पाते रहेंगे।

14) सदा हम एक हैं – यही नारा सफलता का साधन है। संस्कार मिलाने की रास करने वाले सदा ही हर जन्म में श्रेष्ठ आत्माओं के संगठन में रास करते रहेंगे। यहाँ संस्कारों की रास मिलाना अर्थात् भविष्य में श्रेष्ठ आत्माओं के फ्रैन्ड्स वा सम्बन्धी बनना।

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* 2-03-14 *मधुबन*

"जिसके पास विश्वास की शक्ति है, कोई भी कार्य बाबा की मदद से कर रहे हैं तो मेहनत नहीं लगती, सब सहज हो जाता है" (दादी जानकी)

आप सब बड़े मीठे हो, प्यारे हो, बाबा के लाडले हो, सिकीलधे हो। बाबा ने कहा बच्चे तुम्हारी स्थिति विघ्न-विनाशक की हो, उसके सिवाए और कोई बात तो यहाँ सोचने की है ही नहीं। संगम का समय है, बाबा की जो हमारे में उम्मीदें हैं वो अभी-अभी हमको पूर्ण करनी है।

ड्रामा प्लैन अनुसार बाबा ने निश्चयबुद्धि निश्चिंत रहने की पालना दी है, कराने वाला बाबा है, बाबा कहता मैं करनकरावनहार हूँ। यह ज्ञान, यह योग सिखाने वाला कौन है? मुख्य बात है बाबा ने आके समय और स्वयं की पहचान दी है। जिसको हम भी ढूँढते थे, दुनिया भी अभी ढूँढ रही है, उसने हम आप सबको ढूँढ लिया। इस पुरानी दुनिया में पुरानी और पतित आत्माओं को यह पता ही नहीं है हम क्या कर रहे हैं? आधाकल्प से हम भी माया के मोहताज थे, अभी माया को भगा दिया है, यह वायुमण्डल ऐसा बन गया है जो माया बिचारी का नामनिशान भी नहीं है। सूक्ष्म संस्कारों में भी माया छिपी हुई न बैठी हो, ऐसी यह शिवशक्ति पाण्डव सेना है।

यादव, कौरव, पाण्डव हम किसमें हैं? पाण्डवों की है परमात्मा से प्रीत बुद्धि। प्यार, प्रेम, प्रीत...इसमें भी अन्तर है। कल्प पहले वाले हैं तो सिकीलधे हैं, बाबा बहुत प्यार से मिलता है, चलाता है। फिर रूहानियत में प्रेम पैदा हो जाता है, गोप-गोपियों का प्रेम बहुत सुखदाई है। प्रीत बुद्धि निश्चय से विजयी बनने के संस्कार बनते हैं। कभी भी भूल से यह संकल्प भी नहीं आ सकता कि यह कैसे हो सकता है! यह ऐसे है, वैसे है...कोई संकल्प नहीं, क्योंकि प्रीत बुद्धि है। जबकि बाबा हम सबको इतने इशारे दे रहा है तो सिर्फ हर संकल्प कैसा हो उसकी शिक्षा, समझानी, सावधानी जो मिली हुई है, उसके बंधायमान रहो। महारथी हो तो संकल्प भी महारथी के हो। संगमयुग पर हमारा यह अलौकिक दिव्य जन्म है, स्वयं भगवान हमें बर्थ डे की मुबारक दे, यह कितनी बड़ी बात है! इस जन्म की वैल्यु जितनी हमारी बढ़ती जा रही है उतनी 84 जन्मों में काम आयेगी।

देखा है अन्तिम जन्म में भी हमारे संस्कार साधारण मनुष्यों की तरह नहीं रहे हैं। बाबा भी हमें मोहब्बत से उठाता रहा है इसलिए हमारे ऊपर मेहनत नहीं करनी पड़ी है। बाबा से मेहनत नहीं ली है, सत्य नारायण की कथा सम्पूर्ण बनने के लिए सुनी है, सत्य कथा नारायण बनने के लिए भगवान ने स्वयं सुनाई है। भक्ति में ब्राह्मण लोग बहुत प्यार से कथा करते थे। तो मैं आत्मा किसके महावाक्य सुना रही हूँ, मुरली पढ़के सुनाना कितना ऊंचा भाग्य है, मुरली में किसके महावाक्य हैं, यह मुख सुना रहा है, कान सुन रहे हैं। मैं पढ़ रही हूँ, इससे बहुत सुख मिलता है। सुख का वर्णन मुख से करने के बजाए वायब्रेशन से अनुभव करावें, जिससे कोई भी आत्मा को जरा भी अगर दु:ख हो तो चला जाये। जहाँ बाबा हाज़िर हो वहाँ दु:ख का नामनिशान न रहे क्योंकि सतयुग में यह नहीं होगा। ऐसी दुनिया बनाने का काम अभी हम बाबा की मदद से कर रहे हैं इसलिए मेहनत नहीं है पर खुशी होती है। मेहनत उसको करनी पड़ती है जिसके संकल्प में विश्वास की शक्ति नहीं है।

गुल्जार दादी से जब मिलते हैं तो ऐसे अनुभव होता है कि यह ईश्वरीय स्नेह एक दो को एक कर देता है, दो आत्मा नहीं है, जैसे एक है। दादी ऐसा मीठा मुस्कुराती है, अच्छा अच्छा कहती है तो वो अच्छा हो ही जाता है। मैंने कहा दादी एक बात कोई सुनाओ तो कहा अपने संकल्प पर ध्यान हो। दूसरा, जैसा मेरा संकल्प होगा, वचन वा कर्म होगा तो उसका फल औरों को भी मिलेगा। हम पुरुषार्थ करेंगे तो उसका बल अलग है, पर औरों को भी प्राप्ति हुई तो उसका फल अलग है। बल और फल। अगर मुझ आत्मा से आपके सुख-शान्ति-प्रेम की लेन-देन नहीं हुई तो मजा नहीं आयेगा इसलिए यही भावना है कि कभी भी अपने माइन्ड को अपसेट नहीं होने दो। कभी भूल से भी मेरे मन या मेरे मुख पर उदासी वा निराशा का शब्द चेहरे पर आया तो अच्छा नहीं लगता है। एक बारी उदासी आई तो जैसा पुरुषार्थ चलना चाहिए रीयल और रॉयल, वो मिस

होगा। जरा भी कोई आवाज़ मेरे को सुनने को मिला तो सोच चला। तो उसको अन्दर से आने नहीं देना है, इसमें अपने को सेफ रखना है। दिनप्रतिदिन समय जा रहा है, पुरुषार्थ करने का जो उमंग-उल्हास है, कभी कम न हो। वही सारे दिन में कोई एक आध घण्टे के लिए भी होगा या कम होगा तो फिर से जगह भरना मुश्किल है। उमंग-उल्हास की जगह अगर थोड़ी भी खाली हुई तो उसे भरना सहज नहीं है।

हर पल मीठे बाबा की याद बहुत आती है। भोजन करते बाबा ही याद रहता है। ब्रह्मा बाबा को देखा है, स्नान करते भी याद करता है। भल सतयुग में देवता होंगे, पर अभी का शरीर जो है ना, बड़ा वैल्युबुल है। तो जीना है तो भी याद में, मरना है तो भी याद में। सारा दिन याद करने का ही तो काम करती हूँ, बाकी मेरी कोई जिम्मेवारी नहीं है, बाबा करा रहा है, यह अनुभव की शक्ति सतयुगी स्थापना में काम आ रही है। अभी नेचुरल कैलेमेटिज़ आदि के द्वारा कुछ भी हुआ तो कोई रोकेगा नहीं, अभी विनाश आने के पहले हमारा इंतजार कर रहे हैं, इसलिए बाबा कहता है बच्चे सदा एवररेडी रहो। सिर्फ सतयुग में हम खुशी से शरीर लेंगे, खुशी से छोड़ेंगे, या अभी से ही ऐसी प्रैक्टिस कर रहे हैं। भक्तिमार्ग में भी देखा है कोई कोई को शरीर छोड़ने समय यह ख्याल रहता है कि मेरे सामने कोई बेटा बहु न हो ताकि शरीर छोड़ते समय भगवान की याद में रहूँ। ऐसा अन्दर से वैराग्य और त्याग से 100 परसेन्ट तैयारी होनी चाहिए। वैराग्य यानि कोई लगाव नहीं, त्याग यानि कोई इच्छा नहीं। अच्छा, ओम् शान्ति।

दूसरा क्लास

"सेवा की वृद्धि का आधार - स्वमान में रहना और सबको सम्मान देना"

(दादी जानकी)

हम ब्राह्मण बच्चों को भगवान ने गिफ्ट के रूप में लिफ्ट दी है। जैसे आजकल बड़े-बड़े मकान बनाते हैं तो उसमें लिफ्ट जरूर लगाते हैं। अगर लिफ्ट न हो तो बहुत मुश्किल लगता है। हम सबका घर परमधाम, निर्वाणधाम जो ऊंचे से ऊंचा है वहाँ जाने के लिए भी लिफ्ट चाहिए। इसके लिए बाबा कहते बच्चे तुम वाणी से परे रहो। साइलेन्स में रहकर फिर वाणी में आओ। अन्दर साइलेन्स है तो कुछ भी सोचने की जरूरत नहीं है। हमें साइलेन्स में रहने की कोशिश नहीं करनी है लेकिन साइलेन्स में रहना ही है। कईयों को आवाज में आने की खींच होती है। लेकिन जो गुप्त सच्चे अथक पुरुषार्थी हैं उन्हें आवाज से परे रहना सहज लगता है। कोई भी प्रकार की संकल्प नीचे नहीं खींच सकता है।

हमारे संकल्पों की क्वालिटी ऐसी हो जो बाबा से मैच करे। जैसे कहते हैं परमात्मा बाप को यहाँ आने का संकल्प उठा, तो ब्रह्मा तन में अपने समय पर आ गया। उसके निमित्त चारों तरफ शिव जयन्ती मनाते हैं। उसके आने की कोई तिथि तारीख नहीं है। किस घड़ी वो साकार हुआ, कोई को पता नहीं है। लेकिन अव्यक्त होने की घड़ी का पता है। क्लास कराके, खटिया पर लेटे लेटे निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी स्थिति में रह अव्यक्त हो गया। लास्ट में हम सबको यही पाठ पक्का कराया बच्चे इसी स्थिति में सदा रहना और दूसरा निंदा हमारी जो करे मित्र हमारा सोय। जो निंदा करे उसको मित्र समझना, यह बड़ी अच्छी विधि है, वो निंदा करे मैं मित्र समझूँ। तो सोल कॉन्सेस रहने की अच्छी प्रैक्टिस चाहिए। कोई ने प्रश्न पूछा कि हम सोल कॉन्सेस हैं यह कैसे समझें? या उसकी क्या फीलिंग होगी? एक सेकण्ड सब देखो। सोल कॉन्सेस रहने से बाबा के साथ अच्छा कनेक्शन जुड़ जाता है। मैं आत्मा हूँ तो मन शान्त है, बुद्धि शुद्ध है तो सोल कॉन्सेस है। आत्मा शरीर से न्यारी है, परमात्मा के कनेक्शन से लाइट माइट महसूस कर रही है।

मैं आत्मा लाइट हूँ, माइट हूँ... जो पुरुषार्थ बचपन में करते रहे, अभी तक वही पुरुषार्थ है। मैं याद करती हूँ शुरू से अन्त तक यही पुरुषार्थ चल रहा है। पहले-पहले मेहनत नहीं लगती थी तो अच्छा लगता था, अभी कारोबार की प्रवृत्ति में रहने से सोल कॉन्सेस बनने में थोड़ी मेहनत लगती है। परमात्मा बाप ने ब्रह्मा के तन का आधार लिया, तो उसको देख सोल-कॉन्सेस हो जाते हैं। ऐसी प्रैक्टिस सच्चे दिल से कौन करता है, वो हाथ उठाओ। क्योंकि एक सेकण्ड में सोल कॉन्सेस हो जाने से और कोई ख्याल आता नहीं है। यह ब्रह्मा की आत्मा तन में है पर परमात्मा का साथ रहने से यह भी सोल कान्सेस बन गया। तो हम भी इस बात में एक दो का साथ देने में सखा बन जायें।

स्वमान में रहना और सबको सम्मान देना, यह हमारा नेचुरल हो क्योंकि अभी समय के अनुसार ऐसी कई बातें नेचुरल होनी चाहिए, उसके लिए बात भले कुछ भी आ जाये परन्तु फिर भी हम अपना अकालतख्त न छोड़े। बात सामने है, कैसे भी रूप में है, पर यह रूप जो है सोल कॉन्सेस रहने का, इसमें हमें अपने स्वमान में

रहना है। सूक्ष्म जैसे देखते भी देख नहीं रहे हैं। बाबा के प्यार की शक्ति मिल रही है जो स्वमान में रहने में मदद देती है। फिर जो गिफ्ट में लिफ्ट मिली है उससे सेकण्ड में ऊपर चले जाओ। सदा यह स्मृति रहे कि अभी हमें अपनी उड़ती कला से अब जाना है। मैं जब अपने पूर्वजों को देखती हूँ तो हर एक कितना अपने स्वमान में रहे हैं। घड़ी-घड़ी नीचे ऊपर नहीं हुए हैं। तब तो इतनी वृद्धि हुई है पहले सैकड़ों थे फिर हजारों हुए, अभी लाखों हुए हैं। आधार - स्वमान में रहे हैं, सबको सम्मान दिया है। यह विधि बहुत अच्छी है।

सूक्ष्म स्नेह हर एक को खींचता है, इसमें जरा भी देह-अभिमान वाली बात नहीं है। दिखावे वाला पुरुषार्थ अच्छी जीवन जीने नहीं देता है। जीवन जीना है तो कैसे? भगवान का बच्चा, उसकी जीवन देखो तो सही, चेहरा देखते रहें, ऐसा दिल करे। स्टूडेन्ट लाइफ है, पढ़ाई में कमाई है। तो पढ़ाई से प्यार बहुत है। बाबा रोज़ अच्छी-अच्छी बातें बताते, पढ़ाते हैं।

भगवान के बच्चों के दिल का आवाज़ ऐसा निकले जो सोचे वो हो जाये, जैसे ब्लैसिंग बाबा की हैं। जो बाबा के बोल हैं ना वो प्रैक्टिकल में सच होते हैं, हुए हैं, हो रहे हैं। अच्छा।

तीसरा क्लास

"बाबा समान बनना है तो न अधीन रहना है, न किसी को अधीन बनाना है परन्तु सहयोगी बनाना है"

(दादी जानकी)

मधुबन में आने से फिर जाने को जी नहीं चाहता है, फिर बाबा की तीन बातें याद आती हैं। मधुबन आते हैं बाबा को देखते हैं रिफ्रेश हो जाते हैं। दूसरा मधुबन आते हैं बैटरी चार्ज हो जाती है। तीसरा ज्ञान सागर के पास आते हैं बादल भर करके जाकर वर्षा करते हैं। तो कौन हैं जो समझते हैं कि हम बादल भर करके बरसने जा रहे हैं! क्योंकि यहाँ ज्ञान सूर्य भी है, ज्ञान सागर भी है। सूर्य ऊपर से सकाश देता है, सागर ज्ञान की गहराई में लेके जाता है। बादल कहते कुछ नहीं हैं, ऊपर से ही वर्षा करते हैं। तो हम बाबा के बच्चों का रूप कैसा है? प्लेन में ऐसी ताकत है जो बादल को क्रॉस करके ऊपर चढ़ जाता है। बादल प्लेन को नहीं रोक सकते हैं। ऐसे ही बुद्धि प्लेन है तो कोई रूकावट रोक नहीं सकती है।

मधुबन में आपस में मिलने की सबको खुशी होती है ना। सच्चे बच्चे वो हैं जो बेहद के वैरागी हैं। तो अपने आपसे पूछना इतना बेहद का वैराग्य है? कहाँ भी लगाव, प्रभाव तो नहीं है? तो बेहद के वैरागी बनने से जो बाबा कहते स्थिति निरंहकारी, सेवा में निष्कामी, जो बाबा के शब्द है ना, एक एक शब्द की गहराई में जाओ। चेक करो, हम अपने आपको चेक करेंगे तो चेंज हो जायेंगे। चेक तो जरुर करना पड़ेगा, सूक्ष्म कहाँ वैराग्य के बदले कुछ है तो नहीं! इच्छा है यह मिले, ममता है यह चला न जाये क्योंकि यही मेरा सहारा है। बाबा समान बनना है तो न अधीन रहना है, न किसी को अधीन बनाना है परन्तु सहयोगी बनाना है। खुद अपने लिए अन्दर सहजयोगी, सेवा में सहयोगी यह चेक करते हैं ना। जैसे मुझे बाबा ने अपना बनाया तो उसका फायदा मैंने क्या लिया? क्योंकि बाबा का बनने से ज्ञान का खज़ाना मिला है, प्रैक्टिकल लाइफ में ज्ञान की जितनी धारणा करो यानि जीवन में लाओ, उतना वो खुराक का काम करती है। बाबा का आज्ञाकारी बनने से बाबा बहुत शक्ति देता है। अवज्ञा कोई न करे। बाबा की शिक्षाओं में सहारा, साथ, सहयोग और स्नेह भी है वो कोई मिस न करे। जैसे बाबा सिखाता है जो कराता है, जो राइट है यथार्थ है उसमें आशीर्वाद समाया हुआ होता है। बाबा का यह साथ, सहारा और सहयोग सम्पन्नता ला रहा है, कोई कमी न रहे।

रोज की मुरली के लास्ट में वरदान, स्लोगन प्रैक्टिकल करने के लिए भव, (हो जायेगा)। मैंने देखा है आशीर्वाद मांगो नहीं, पर आशीर्वाद काम कर रही है, सिर्फ हमको आज्ञाकारी, वफादार, इमानदार बनना है। पहली आज्ञा है मनमनाभव, चेक करो। सबसे अच्छा है, सहज है। विष्णु समान बनने के लिए दिन रात चार भुजायें काम कर रही हैं। पहले स्वदर्शन का चक्र, पीछे ज्ञान-योग के पराकाष्ठा की गदा। हर रोज़ बाबा कहता है, चक्र के ज्ञान को बुद्धि में रखो तो कोई भी और संकल्प विकल्प नहीं आयेगा। ज्ञान की ताकत आ जायेगी। मनमनाभव मध्याजीभव की स्थिति में रहेंगे तो परचिंतन परदर्शन से छूट जायेंगे। जीवन कमल फूल समान न्यारी प्यारी बन जायेगी। फिर शंखध्वनि, जो आवाज़ करेंगे, ज्ञान सुनायेंगे तो किसको भी तीर जैसा लग जायेगा। शंख नेचुरल सागर का बच्चा है, उसका आवाज़ बड़ा अच्छा लगता है, जब कोई अच्छा बजाते हैं। कहीं सेवा में जाते हैं तो खुशी में आकर शंख बजाते हैं, तो गूंजता है। कोई कोई को देख लगता है इनकी स्थिति कमल फूल समान है। कमल फूल की बहुत महिमा है। महिमा योग्य बनना हो तो कमल फूल समान बनो। मेरी कोई महिमा करे कोई इच्छा नहीं है पर महिमा निकलती है, तो कहते हैं बड़ी वन्डरफुल है। जितने न्यारे हैं उतने प्यारे हैं। जरा भी पानी का छींटा भी नहीं

पड़ने देते हैं।

एक बार मैंने बाबा से पूछा, बाबा त्रिमूर्ति के चित्र में विष्णु को खड़ा क्यों किया है? तो मीठे बाबा ने कहा जिसके सामने लक्ष्य होता है, जो लक्ष्य लेता है वो कभी बैठ नहीं सकता है। बैठने से लक्ष्य को कैसे हांसिल करेगा, यह ब्रह्मा मनमनाभव की स्थिति में स्थित बैठा हुआ है, विष्णु लक्ष्य के रूप में खड़ा है, शंकर मध्याजीभव की तपस्या करता हुआ दिखाया है।

जीवन में शान्ति हो तो शक्ति रहती है, पर खुशी हो तो शान्ति रहती है। प्रैक्टिकल लाइफ दिखाई पड़े, अनुभव हो। खुशी, शान्ति, शक्ति, प्रेम, आनन्द स्वरूप बन जाना है। पाँच तत्वों के शरीर में रहते हैं, पाँच तत्वों वाली दुनिया में रहते हैं, उसमें सिर्फ सतोगुणी बनने से सतोप्रधान बन जायेंगे। शुरू शुरू में बाबा बहुत करके कहता था बच्चे, तुम सिर्फ सतोगुणी बनो। जैसे हंस व्हाइट व्हाइट है तैरना और उड़ना दोनों जानता है। हंस के मुआफिक अपनी जीवन यात्रा हो। फिर हंस बगुला इकट्ठा नहीं रह सकते, उसकी नेचर बोल-चाल और हंस का बोल-चाल दोनों में बहुत बड़ा अन्तर है।

भगवान सद्गति करने की जो मत देता है वो जितनी न्यारी है उतनी प्यारी है। सिर्फ मुख से महिमा नहीं करते हैं, दिल से पहचान करके प्राप्ति से महिमा होती है। वो क्या करता है, कैसे कराता है, दुनिया ही नई बना देता है, पतितों को पावन बना देता है, कमाल है! मनुष्य आत्मा ऐसे कर्म करे जो ऐसा लक्ष्मी-नारायण जैसा बने। वो कर्म कौन-से हैं? हमारा संकल्प हो तो कैसा? वाणी हो तो कैसी? कर्म हो तो कैसा? सम्बन्ध हो तो कैसा? लक्ष्मी-नारायण बनने के लिए संकल्प, वाणी, कर्म और आपस के सम्बन्धों में अटेन्शन देना है, इसके ऊपर बाबा ने बहुत मुरलियाँ चलाई हैं। विघ्नों को खत्म करने के लिए बाबा कहता है सिर्फ अटेन्शन रखो। अटेन्शन से बहुत फायदा है। टेन्शन से नुकसान है। थोड़ा भी कोई बात का टेन्शन होगा, तो न खुशी होगी, न उमंग-उत्साह होगा। तो वो लाइफ नहीं है। अन्दर ही अन्दर खुश रहना और चलते फिरते एक जगह बैठे सारे विश्व में शान्ति के वायब्रेशन फैलाना। जो हुआ है, कैसी भी बात है, कुछ भी है चिंतन वा वर्णन न करके अन्दर की जो शक्ति फैलाने की शान्ति है, वह अनुभव हो। शान्ति अन्दर है तो शक्ति बाहर काम कर रही है, कौन यह अनुभव कर रहा है? मैं शान्त... उसमें प्यार है, रूहानियत है, सच्चाई है। पास बैठे हैं या दूर बैठे हैं, पर बाबा के साथ हैं।

तो समय थोड़ा है जो करना है अब कर लें, कल किसने देखा, यह मेरा मंत्र है। बाकी कोई भी बात मेरे से हुई या किसी से हुई फॉरगिव एण्ड फॉरगेट। (क्षमा करना और भूल जाना) यह चढ़ती कला के लिए, आगे बढ़ने के लिए बहुत अच्छी विधि है। फॉरगिव करने वाला बड़ा समझदार सयाना होता है। बाबा हमको कितना माफ करता है, सच्ची दिल से तुम मुझे याद करो तो तुम्हारे पास्ट के सारे किये हुए विकर्म मैं विनाश कर दूँगा। सच्ची याद से कोई विकल्प नहीं आयेगा। बाबा का बनने के बाद भी कोई भूल हुई है तो माफी मांगो सच्ची दिल से, छिपाओ नहीं। बाबा जानता है ना मैं क्या बताऊं, नहीं, यह भी ठगी है। मेरे को भी कहते हैं आप तो जानती हो ना, पर फिर भी कोई सच बताता है तो कहेंगे अच्छा हो गया ना, माफी मिली फिर आगे नहीं होगा, वो ताकत भर जायेगी। बाबा अपना बनाके अच्छे कर्म करा देगा। यूँ तो बाबा जानी-जाननहार है इसलिए सावधान करता रहता है। इसमें कोई अपना नाज़ुकपना दिखाते हैं पर अभी मजबूत बनो, कठोर नहीं।

बाबा ने सारे विश्व की सेवा सच्चाई से कराई है। सच्चाई को देख झूठ को खत्म किया है, सारी दुनिया से भी झूठ सारा खत्म हो जायेगा, हुआ ही पड़ा है। विष्णु जैसा बनना है तो विनाश सामने खड़ा है, यह कभी कई आत्माओं को ख्याल आया, बाबा ने कहा था जल्दी विनाश हो जायेगा, पर हुआ नहीं तो कईयों को संशय आया, चले गये। अरे, हमको तो तैयार होना है ना। विनाश के पहले ऐसी स्थिति हो जो फरिश्ते समान ऊपर उड़के चले जायें। दु:ख नहीं हो रहा है, शान्तिधाम में जा रहे हैं नाटक में पार्ट पूरा हुआ। इस नाटक में भले कोई 84 जन्म लेता है, कोई एक जन्म लेता है परन्तु अभी सबके लिए टाइम पूरा हुआ, चलो अपने घर। अच्छा।

"गुल्जार दादी जी का धारणायुक्त क्लास"

हम सब पहले कहते थे कि मधुबन का तट हो, मम्मा बाबा सामने हों तब प्राण तन से निकलें...। लेकिन जब सेवा में जाने का समय आया तो यह परीक्षा के रूप में इसको पास करके हम सेवा में चले गये। पहले तो हमें बाहर जाने आने रहने और भाषण करने का अभ्यास था नहीं इसलिए थोड़ा लगता था लेकिन बाबा ने कहा तुम सिर्फ जाओ फिर बाबा आपेही आपसे जो कराना है करायेगा क्योंकि बाबा ही करनकरावनहार है ना। तो सचमुच हमने देखा कि जब सेवा में चले गये तो सफलता मिलने लगी तो फिर उमंग और बढ़ता गया। सिर्फ क्या है कि इसमें मैं-पन और मेरा-पन नहीं होना

चाहिए क्योंकि वो नुकसान कर देता है, वो फिर रूहानी रूहाब के बजाए अभिमान के रूप में उल्टा नशा आ जाता है, तो रिजल्ट नहीं निकलती है। अगर ये याद रहे कि करावनहार बाबा है, मैं करनहार निमित्त हूँ, करानेवाला बाबा है तो कोई भी काम मुश्किल नहीं है, कोई बड़ी बात नहीं है। सफलता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। बाबा तो कहते हैं सफलता तो तुम्हारे गले का हार है। अरे! भगवान मिल गया तो उसके आगे सफलता क्या है? तो इसी निश्चय और नशे में रहो, सफलता हुई पड़ी है।

खुशी से जिओ, खुश रहो, खुशी बाँटो तो इतना सहज योग बाबा ने हमें सिखाया है, सहजयोगी बनाया है। तो यह चेक करो - योगी तो हम बने हैं, लेकिन सहजयोगी बने हैं या मुश्किल योगी बने हैं? दूसरा सेवा में मन को बिजी रखो, बस, क्योंकि ब्राह्मण जीवन में मन ही धोखा देता है। भटकता भी मन ही है, परेशान भी मन ही करता है। संकल्प के बाद ही वाणी और कर्म में आते हैं इसीलिए बाबा कहते हैं मन को सेवा में बिजी रखो। मतलब अपने ऊपर अटेन्शन दो, जहाँ हमारा काम न हो वहाँ हम सोचें ही क्यों? इसलिए बाबा कहता है बस अपने ही पुरूषार्थ में इतने मस्त रहो जो दूसरे को देखने की आवश्यकता ही नहीं है। कोई जरुरी काम में बिजी हो तो उसका ध्यान और कहीं दूसरी बातों में नहीं जाता है। बाकी फ्री है तो वो यहाँ वहाँ जरूर देखेगा। तो हमारा मन इतना बिजी रहे, सेवा में और याद में। इसमें इतना बिजी रखो, जो यहाँ वहाँ भटकने को टाइम ही नहीं हो। लेकिन उसके लिए अपना अटेन्शन अपने ऊपर रखना पड़ेगा।

तो अपनी चेकिंग आप ही करो। वायुमण्डल को तो वायब्रेशन्स से ही परिवर्तन करेंगे, उसको कोर्स कराके तो परिवर्तन नहीं करेंगे ना! तो इतनी पॉवर हमारे में है या नहीं है, यह आपेही अपने को चेक कर सकते हो, दूसरा कोई नहीं कर सकता है। तो बाबा कहते हैं, ऐसे अपना चार्ट चेक करते रहो। एक है अपने पुरूषार्थ से खाता जमा करना, दूसरा - स्वयं सन्तुष्ट रहना और जो साथी, सहयोगी हैं उन्हों को सन्तुष्ट करना। इससे दुआओं का खाता जमा होगा। तीसरा सेवा सभी करते हैं लेकिन नि:स्वार्थ बेहद की सेवा के भाव से सेवा किया तो यह पुण्य का खाता जमा हुआ। तो यह तीनों खाते अपने चेक करो।

अभी बाबा जो हमको बेफिक्र बादशाह बना रहा है, उसका अनुभव तो करो। फिर भी कईयों को आदत होती है, वो बोझ उठाने के बिना रह नहीं सकते हैं। बाबा कहते तुम्हारा यह बोझ मुझे दे दो, फिर भी खुद उठा लेते हैं तो यह आदत 63 जन्म की पड़ी हुई है। फिर कहते हैं बाबा बचाओ, बाबा यह करो, बच्चे हो तो चिल्लाते क्यों हो? बच्चे हो तो अपना हक जमाओ। बाबा कहते तुम तो बालक सो मालिक हो। तो कोई भी अपने को कम नहीं समझे, अभिमान के रीति से नहीं, रूहानी प्यार के, नशे के रीति से याद करो। कोई भी है, कैसा भी है लेकिन बाबा ने मेरे को पहचाना, बाबा की नज़र मेरे ऊपर पड़ी... तो हर एक बच्चे में कोई-न-कोई विशेषता है। कोटों में कोई है क्योंकि दुनिया में कोई कितने भी वी.वी.वी.... आई पी हो लेकिन उन्हें अपना ही पता नहीं, मैं आत्मा हूँ...। तो भगवान ने मुझे चुना, यह कम बात है क्या! तो भगवान का बच्चा बन गये, इसी नशे और खुशी में चलते चलो यही बाबा चाहता है।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

"आत्मा को आइरन से रीयल गोल्ड बनाने की यह अमूल्य घड़िया हैं, इन्हें सफल करो"

जब हम यही पहला लेसन पक्का करते - तो मैं आत्मा हूँ ही इन इन्द्रियों से परे। आत्मा है ही आन्नद स्वरूप, प्रेम स्वरूप। इसी में ही हम स्थित होते जाएं तो आत्मा है ही गोल्ड। देह समझने से आत्मा आइरन हो गई है। यही अमूल्य घड़ियाँ हैं जिसमें आइरन एजड आत्मा को एक धक से, संकल्प से सेकण्ड में सोना बना सकते। इसलिए कहते लोहा गर्म हो तो एक धक हथौड़ा लगाओ और मोल्ड हो जाता। तो अभी हम आत्मा भी बिल्कुल तमोप्रधान गर्म लोहा हो गई हैं। बाबा ने एक ही धक लगाकर मोड़ दिया। बाबा ने योग अग्नि में मुझ लोहे स्वरूप आत्मा को पिघला दिया और सब संस्कार खत्म कर सुन्दर आत्मा बना दिया। बाबा ने कहा तू मेरी हो माना मैं सोना बन गई।

जब कहा तू मेरी हो तो देह और देह के सब सम्बन्ध खत्म हो गये। यह हक बाबा ने तब लगाया जब आत्मा बिल्कुल गर्म आइरन हो गई। तो मोड कर गोल्ड बना दिया। बाबा ने गोल्ड बनाया फिर लोहा क्यों बनते? फिर क्यों कहते कि मुझे थोड़ी-थोड़ी देह की आकर्षण होती। आप मुये मर गई दुनिया। हमारा प्राणों का प्राण, जान का जिगर एक बाबा है, हमारा बाबा के

सिवाए है ही कौन। वही हमारा बाबा है जिसको दुनिया नहीं जानती। हमने अपने बाबा को पाया बाकी कौन सा सुख चाहिए! कौन सी सम्पत्ति चाहिए! कौन सा परिवार चाहिए! एक में सब आ जाता, तो मैं किसके साथ बुद्धि लगाऊं। एक संकल्प करो तो सब खत्म हो जाता। घर चले जाओ, नीचे क्यों आते। मेरे संस्कार हैं - यह कौन कहता? मैं हूँ ही सच्चा जेवर। फिर कहकरके अपने को आर्टीफिसल जेवर क्यों बनाते। कई कहते है मुझे शान्ति की अनुभूति ही नहीं होती। मैं कौन हूँ? जब कहते मुझे खुशी की, शान्ति की अनुभूति नही होती तो मैं किसकी हुई? रावण की या बाप की? रावण का ठिकाना ही नहीं, उसका गुण है अशान्ति फैलाना। झगड़ा कराना। बाबा का गुण है शान्ति, प्रेम। आपकी वह प्रापर्टी है, आप उस प्रापर्टी को त्याग दूसरे की प्रापर्टी क्यों लेते। हमारा संस्कार है कि हम सब एक बाप की सन्तान हैं फिर हमसे कौन सा विकर्म होगा! कहाँ मेरी वृत्ति दृष्टि जायेगी! वृत्ति में है हम सब एक बाबा के बच्चे हैं। बाबा ने ब्रह्मा का भी फोटो नहीं रखने दिया, फिर हम दूसरों को कैसे याद कर सकते!

बाबा ने जन्म से ही हमारा सब कुछ परिवर्तन कर दिया। पहले हम कभी 4 बजे उठते थे क्या? तो बाबा ने पहले तो निन्द्रा को परिवर्तन किया। गॉडली सटूडेन्ट कह हमारी पढ़ाई को परिवर्तन कर दिया। ड्रेस बदल ली, भोजन बदल दिया, क्या कभी दिल होती है कि मैं होटल में जाकर खाऊं। क्या ऐसा कभी संकल्प उठता कि आज अच्छी पिक्चर आई है, जरा देखकर आऊं। आज अच्छा श्रृंगार कर शादी में तो जाऊं। ऐसा संकल्प भी उठता है? या ऐसा कभी संकल्प उठता, दुनिया वालों की तरह रमी (ताश) खेलें। तो यह सब बाबा ने जन्म लेते ही परिवर्तन कर दिया है ना। जन्म होते ही तन-मन-धन सब परिवर्तन हो गया। बाकी क्या परिवर्तन करना है? हमारी बुद्धि में है, एक बाबा एक सर्विस।

सर्विस में फिर यह विघ्न आता, कहते यह अच्छी सर्विस करती, यह नहीं करती। इस बहन को चांस मिलता हमें नही मिलता। इसका सेन्टर बहुत अच्छा है, मेरा नहीं। लेकिन मैं पूछती कौन सा एग्रीमेंट में मिला कि यह तेरा सेन्टर है? कहते मेरी तो रुची नहीं होती। मेरी दिल नहीं होती, यह सब तब तक है जब तक अपनी स्व स्थिति में स्थित होने का अनुभव नहीं है। बाबा की यादों में खो जाओ तो बाकी क्या चाहिए। नैचुरल चलो तो मेहनत नहीं लगेगी। कर्तापन में जब चलते, करना है, करूँगा तो मेहनत जरूर लगेगी। परन्तु बाबा मुझसे करा रहा है, सहज करते चलो। कर्तापन में आयेंगे तो थक जायेंगे। आज मेरी रुची नहीं, आज मेरा मन नहीं, आज मेरी दिल नहीं....अरे यह किसकी सेवा करते हो! किसको जवाब देते हो? ऐसा जवाब देते जैसे मैं सेठ हूँ। सेठ बाबा है - मैं जवाब देती ओ सेठ आज मेरी रुची नहीं है। आज उमंग नहीं है। माना आज पंख हैं, कल पंख टूट गये तो फिर उड़ेंगे कैसे।

हमें तो बाबा ने 21 जन्मों के लिए पंख दे दिये। बाबा ने हमारे ऊपर हाथ फेर दिया, न कोई बोझ है, न कोई चिन्ता है। क्या आप सबको मदोगरी की चिन्ता है? भण्डारी की चिन्ता है क्या? दाल रोटी कैसे मिलेगी यह चिन्ता है क्या? बाबा ने सबको सुखधाम बनाकर दिया है, जहाँ पवित्रता, शान्ति सुख का दिन रात पाठ पढ़ते हो।

मैं बहुत बार ऐसा अनुभव करती हूँ कि जैसे मैं आत्मा इस शरीर से अलग खड़ी हूँ, मैं हीरा हूँ, मुझ हीरे में कौन सा दाग है! मैं देखती मेरा हीरा बिल्कुल फर्स्ट क्लास है। बाबा ने मेरा हीरा चमकता हुआ फ्लोलेस बनाया। बाबा के बच्चे वर्से के अधिकारी फ्लो वाले हैं ही नहीं। दागी हीरा पूजा में थोड़ेही आयेगा। फिर आप अपने को दागी क्यों देखते। मैं हूँ ही फ्लोलेस डायमण्ड। फिर मेरे में कौन सा फ्लो? कोई आसक्ति, कोई ममता? कोई आशा? अन्दर में क्या है? एक बाबा मिला तो सब कुछ मिला। अब क्या चाहिए। बाबा ने इतना ऊंचा मान दे दिया कि तुम हो लाइट हाउस। फिर हमें और कौन सा मान चाहिए। मैं संगम पर बाबा का दिलतख्त नशीन बच्चा हूँ। तो और कोई क्या मान देगा। वैसे सृष्टि की आदि रचना है मेल फीमेल। बाबा ने हमें उससे भी परे कर दिया। न हो तुम मेल, न हो तुम फीमेल। यही सूक्ष्म प्वाइंट है, इसी चिन्तन में रहो तो सारी चिन्तायें खत्म। फिर यह ऐसी है, वैसी है, सब बातें खत्म हो जायेंगी। सारे ज्ञान का सार है अब घर जाना है, रिटर्न जर्नी है। फरिश्ता स्थिति बनानी है। फरिश्ता अर्थात् ट्रांसपेरेन्ट लाइट का। रोज़ सवेरे-सवेरे इस स्थिति का अभ्यास करो। इसमें अलबेले नहीं बनो। अगर सवेरे-सवेरे की साधना छूटती तो दूसरी बातें आती। बैलेन्स टूट जाता। सवेरे उठते यह साधना जरूर करना है। कहते क्या करें सुस्ती आती है। लेकिन जब एक बार स्ट्रांग हो जाते तो आदत छूट जाती। सवेरे-सवेरे शरीर से उड़ जाओ। यह अभ्यास करो तो सब बातें छूट जायेंगी।

यह सृष्टि का खेल एक रामायण है इसमें कोई राम है तो कोई रावण। कोई विभीषण है तो कोई मदोदरी....लेकिन हमें तो राम से प्रीत रखनी है। यह स्टोरी चलती है, खेल है। हमें तो यह कथा रोज़ सुनने को मिलती। कथा सुनी पूरी हो गई। तू आत्मा मैं आत्मा बाकी और क्या याद रखें। खेल देखो तो हंसी आ जायेगी। अच्छा।